International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 20-10-2021; Accepted: 05-11-2021; Published: 21-11-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 64-66

गांधी और लोहियाः एक समदृष्टि

अखिलेश त्रिपाठी
ईश्वरशरण पी. जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वस्तुतः महात्मा गांधी एवं डा. लोहिया एक ही कार्यरत जीवन की दो अभिव्यक्तियां हैं। भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति डा. लोहिया की अनन्य आस्था थी। गांधी तो कर्म में इतने डूबे हुए व्यक्ति थे कि उन्हें केवल अगला कदम ही दिखता था। और वह अगला कदम इतना दृढ़ और युगान्तकारी था इसके लिए प्रमाण ढूढ़ने की जरूरत नहीं है। वह स्वयम् मील के पत्थर की तरह स्पष्ट है। डा. राम मनोहर लोहिया एवं महात्मा गांधी में कई बिन्दुओं पर मतभेद भी था यथा गांधी के ट्रस्टीशिप की अवधारणा, परन्तु समाजवादी दल के नेताओं में नरेन्द्र देव तथा जयप्रकाश नारायण पर मार्क्सवाद का सबसे अधिक प्रभाव था।उन्होंने पत्थरों की भाषा को पढ़ने की कोशिश की है। यातना शिविर में अपनी असीम सहन शक्ति को योगाभ्यास का एक अंग माना है। मूर्तियों के माध्यम से मनुष्य की जातीय स्मृति और पहचान को व्याख्यायित करने की कोशिश की है। साहित्य, रस, आनन्द, काव्य भाषा, भूषा, भवन इन सबका एक विचित्रा निरूपण और व्याख्या हमें उनके आलेखों में मिलती है।

मूल शब्दः गांधीवादी विचारधारा, भारतीय समाजवाद, लोकतांत्रिक, मानवतावादी दृष्टि, राजनीतिक चिन्तन

प्रस्तावना

कर्म अल्प आयु में ही जीवन को अमरत्व प्रदान करा देता है। किन्तु जीवन निरन्तर जीवित रहने के बावजूद अमरत्व प्रदान नहीं करा पाता। इतिहास पुरूषों का जीवन भी आयु, वर्ष, महीनों से नहीं वरन् उनके निरन्तर कार्यरत रहने से जाना जाता है। ऐसे कर्म जो कीर्तिमान बनकर प्रकाश स्तम्भ सदृश्य दीपमान हो, उनकी पहचान कठिन होती है पर कर्म की प्रखरता काल के वक्ष पर अपना प्रभाव छोड़ जाता है।

प्रारम्भ में स्वतंत्राता के पूर्व डा0 राम मनोहर लोहिया पर पंडित नेहरू का प्रभाव था। लोहिया ने बार–बार कहा है कि वह केवल एक व्यक्ति से प्रभावित रहे हैं, वह गांधी जी हैं, आधा आदमी जिससे वे प्रभावित थे, वह पंडित जवाहर लाल नेहरू हैं, वह आजादी के पहले वाले नेहरू हैं।[1]

गांधी तो कर्म में इतने डूबे हुए व्यक्ति थे कि उन्हें केवल अगला कदम ही दिखता था। और वह अगला कदम इतना दृढ़ और युगान्तकारी था इसके लिए प्रमाण ढूढ़ने की जरूरत नहीं है। वह स्वयम् मील के पत्थर की तरह स्पष्ट है।

डा. राम मनोहर लोहिया एवं महात्मा गांधी में कई बिन्दुओं पर मतभेद भी था यथा गांधी के ट्रस्टीशिप की अवधारणा, परन्तु समाजवादी दल के नेताओं में नरेन्द्र देव तथा जयप्रकाश नारायण पर मार्क्सवाद का सबसे अधिक प्रभाव था। उनकी तुलना में लोहिया पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव अधिक था।[2]

डा. लोहिया ने बार–बार कहा है कि वह केवल एक आदमी से प्रभावित रहे हैं, वह गांधी के प्रति लोहिया का आकर्षण स्वाभाविक था क्योंकि गांधी केवल जीवन दर्शन के व्याख्याता नहीं थे। वह दर्शन के साथ कर्म को भी जोड़ते थे। गांधी का दर्शन किताबी नहीं था। वह साक्षात कर्म से निःसृत होता था और कर्म की प्रेरणा देता था। कर्म प्रधान होने के नाते वह मूलतः आचरण की कसौटी पर सिद्धान्त को कसता था। डा0 लोहिया को लगता था, गांधी जी चाहे जितना सत्य, अहिंसा और धर्म की नितान्त आध्यात्मिक बाते करें, मूलतः अपने लिए भी उन सबको आचरण के स्तर पर ढालते थे, कर्म के स्तर पर साकार करने में विश्वास करते थे।[3]

ग्रन्थ ''राम–कृष्ण एवं शिव'' भारतीयता के प्रति इसी अटूट आस्था का प्रतिफल है। डा. लोहिया गीता, एवं उपनिषदों को भी समादर की दृष्टि से देखते हैं।

यद्यपि भारत की सांस्कृतिक व्यवस्था के कुछ तत्वों का डा. लोहिया ने कटु आलोचना की है यथा जाति व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था। वह मानते थे कि वर्ण व्यवस्था बल द्वारा निर्मित की गयी एक व्यवस्था है जिसमें गुण–कर्म का कोई मूल्य नहीं है।

राम–कृष्ण एवं शिव के बारे में आध्यात्मिक दर्शन ने डा. लोहिया को कई प्रकार से प्रभावित किया यथा जीवन, समाज के आदर्श निर्धारण में उन्हें उनसे प्रेरणा मिली। इसी प्रकार समाज में व्याप्त विसंगतियों, त्राुटियों अन्यायों को दूर करने के लिए उपयुक्त साधन के चयन निर्धारण में सहायता मिली।[4]

डा. राम मनोहर लोहिया पर जर्मनी के लोकतांत्रिक समाजवाद का अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। 1932 में ''नमक सत्याग्रह'' विषय पर डा0 राम मनोहर लोहिया ने डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की। वहां के राजनीतिक चिन्तन एवं परिवेश का प्रभाव उनके सम्पूर्ण साहित्य में देखा जा सकता है। इस प्रभाव के आधार पर उन्होंने ''जर्मन सोशलिस्ट पार्टी (1962), नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया। डा0 लोहिया जब जर्मनी से स्वदेश आये तो यूरोपियन लोकतांत्रिक समाजवाद और रूसी साम्यवाद के प्रति उनके मन में काफी लगाव था। उन्होंने सन् 1929 में प्रारम्भ हुई वैश्विक आर्थिक मन्दी के प्रभाव और फासिज्म के उदय को देखा था लेकिन शीघ्र ही उन्हें यूरोप से निराशा हुई। स्पेन के गृह युद्ध के समय विश्व के लोकतांत्रिक कहलाने वाले देश, स्पेन में लोकतंत्रा के विनाश को देखते रहे। अवीसीनिया, चीन, ब्रिटेन तथा रूस के मामले को प्रत्यक्षतःविश्व ने देखा था। साम्यवाद के बारे में डा0 लोहिया को कोई भ्रम नहीं रहा। समाजवादी कहलाने वालों ने किसी भी दशा में अपने–अपने साम्राज्यों से हटना स्वीकार नहीं किया। यूरोपीय सभ्यता पर उनकी

रही सही आस्था भी समाप्त हो गयी।[5]

समाजवाद एक ऐसा सपना है जिसने बीसवीं सदी में दुनिया को सार्वाधिक आन्दोलित एवं प्रभावित किया।

21वीं शताब्दी में दुनिया के अलग–अलग कोने में अलग–अलग ढंग से लोग इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए जुझते रहेगें, इसमें शक नहीं है। जैसे ईश्वर प्राप्ति के लिए अलग–अलग मार्ग खोजे और बनाये जाते हैं वैसे ही विषमताओं का उन्नमूलन करके समता परक समाज व्यवस्था के निर्माण के लिए अलग–अलग ढंग से प्रयोग किये गये हैं लेकिन इन सबकी मूल प्रेरणा और लक्ष्य एक ही रहा है।

भारतीय स्वतंत्राता संग्राम में सक्रिय नवजवानों के एक समूह ने किसी एक अन्तराष्ट्रीय केन्द्र से बंधकर समाजवाद को आयात करने के बजाय अपने देश की माटी और संस्कृति से एक नयी व्यवस्था की रचना का सूत्रापात किया। इनमें आचार्य नरेन्द्र देव, अच्चयुत पटवर्धन, युसूफ मेहर अली, जय प्रकाश नारायण, मीनू मशानी, एन. जी. गोरे, सम्पूर्णा नन्द, कमला देवी चट्टोपाध्याय, एम. एन. जोशी एवं डा. राम मनोहर लोहिया को भारतीय समाजवाद के प्रमुख संस्थापक माना जाता है।

इसमें डा. राम मनोहर लोहिया का अपना अप्रतिम स्थान एवं महत्व है। डा0 राम मनोहर लोहिया के समाजवाद की अपनी विशिष्टता एवं मौलिकता है, जो उन्हें अन्य चिन्तकों से पृथक्क करती है।

डा. लोहिया अपने चिन्तन में स्वतंत्र थे। वह किसी के विचारों के अनुकरण में विश्वास नहीं रखते थे। वह मौलिक चिन्तक थे। उन्होंने भारतीय दर्शन एवं धर्म की रूढ़िवादी परम्पराओं को स्वीकार नहीं किया। डा0 लोहिया वस्तुतः नास्तिक थे। ईश्वर और आत्मा परमात्मा में उनकी कोई आस्था नहीं थी। फलतः उन्होंने वेद शास्त्रों की अकाट्यता, वर्ण व्यवस्था, ईश्वर के अस्तित्व आत्मा की अमरता, स्वर्ग–नरक, पार लौकिकता और मोक्ष आदि को स्वीकार नहीं किया। उनका चिन्तन मानव की समस्याओं एवं कष्टों का अन्त करने तक सीमित रहा। मानवतावादी दृष्टि, विश्व समाजवाद, समान असंगति, सामाजिक समता, विचार एवं वाणी की स्वतंत्राता, कर्म का संयम्, वर्णाधारित व्यवस्था का विरोध, जाति प्रथा का अन्त चौखम्भा राज तथा प्रशासन आदि डा. लोहिया के चिन्तन के मौलिक तत्व हैं। निश्चय ही डा0 लोहिया भारत के मौलिक सामाजिक एवं राजनीतिक विचारकों में प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं।[6]

डा. लोहिया विद्यार्थी जीवन से ही अनेक प्रकार के संगठनों से जुड़े रहे,सन् 1920 में लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु को उन्होंने गम्भीरतापूर्वक लिया और बम्बई के मारवाड़ी कालेज के अपने छात्रा साथियों द्वारा हड़ताल करवा कर उसका नेतृत्व किया। यहीं से लोहिया के संघर्षमय जीवन का आरम्भ हुआ। वस्तुतः वही वह क्षण था जब डा. राम मनोहर लोहिया ने भारत की राजनीति में प्रवेश किया।

डा. राम मनोहर लोहिया का कार्यात्मक जीवन स्वतंत्राता के लिए संघर्ष एवं समाजवाद को अनुप्रयोग में लाने का था। सन् 1920 में वह राजनीति में सक्रिय हुए तथा साइमन कमीशन का विरोध किया। भारत में समाजवाद को नूतन आयाम देने के लिए सन् 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के स्थापना सम्मेलन में भाग लिया। भारत की स्वतंत्राता के वे प्रबल पक्ष पोषक रहे। वह कांग्रेस पार्टी में भी सदैव सक्रिय रहे। 1936 में डा. लोहिया ने कांग्रेस पार्टी के विदेश मंत्राी का पद सम्हाला डा0 लोहिया की गांधी एवं गांधी के विचारों में गहरी आस्था थी। वह गांधी से अपेक्षा रखते थे कि वह स्वतंत्राता आन्दोलन को छेड़ें, इसी निमित्त 1938 में इलाहाबाद से महात्मा गांधी को पत्रा लिखा।

डा. राम मनोहर लोहिया ने 40 से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिसमें समाजवाद की गवेषणा को गयी है। इन ग्रन्थों में समाजवाद के आर्थिक आधार, समाजवादी चिन्तन, नया समाज नया मन, समाजवादी एकता, जर्मन सोशलिस्ट पार्टी, मर्यादित उन्मुक्त और असीमित व्यक्तित्व और रामायण मेला, भाषा, इतिहास चक्र, धर्म पर एक दृष्टि, निजी और सार्वजनिक क्षेत्रा, भारत में समाजवाद, समाजवाद की अर्थ नीति, समाजवाद की राजनीति, समाजवादी आन्दोलन का इतिहास, सरकारी मठी और कुजात गांधीवादी, अर्थशास्त्रा मार्क्स से आगे, मार्क्स गांधी एण्ड सोशलिज्म, इण्टरवल ड्रिंग पालटिक्स, द कास्ट सिस्टम तथा गिल्टी मैन आफ इण्डियाज पार्टीशन महत्वपूर्ण हैं।[7]

संसद के बाहर भी डा. लोहिया सक्रिय रहे। उन्होंने भारतीय राजनीति को तीव्र किया। अंग्रेजी हटाओ, दाम बांधो, जाति तोड़ो, हिमालय बचाओ, कांग्रेस हटाओं देश बचावो, जैसे नारे दिये और आन्दोलनों का संचालन किया।

संसद में प्रवेश के उपरान्त उनकी कुशाग्र बुद्धि, तीखी आलोचना तथा विद्रोही व्यक्तित्व का भली भांति परिचय हुआ। उनके विचार विवादास्पद बने रहे परन्तु उन्होंने जाति–प्रथा आर्थिक शोषण, धर्मान्तरण, जमींदारी प्रथा बाल विवाह पर कड़े प्रहार किये। कुछ परम्परावादी तत्व उनसे नाराज हुए परन्तु सामान्य जन ने उनका खूब साथ दिया।

वस्तुतः महात्मा गांधी एवं डा0 लोहिया एक ही कार्यरत जीवन की दो अभिव्यक्तियां हैं। भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति डा. लोहिया की अनन्य आस्था थी। डा. लोहिया ने अपनी पुस्तक ''इण्टरवल डयूरिंग पलिटिक्स'' में योग से लेकर भारतीय पुरातत्व, इतिहास धर्म एवं आध्यात्म सबका विवेचन किया है। उन्होंने पत्थरों की भाषा को पढ़ने की कोशिश की है। यातना शिविर में अपनी असीम सहन शक्ति को योगाभ्यास का एक अंग माना है। मूर्तियों के माध्यम से मनुष्य की जातीय स्मृति और पहचान को व्याख्यायित करने की कोशिश की है। साहित्य, रस, आनन्द, काव्य भाषा, भूषा, भवन इन सबका एक विचित्रा निरूपण और व्याख्या हमें उनके आलेखों में मिलती है। भारत के नदियों के प्रति उनके मन में रागात्मक भाव है, विराट समुद्र, समृद्ध समुद्र की अनन्त विस्तृत लहरों में उनकी जो भावनाएं व्यक्त होती हैं, हिमालय, तिब्बत, उर्वसीयम, नागालैण्ड के प्रति उनकी जो संवेदनाएं हैं और पशु पक्षियों के प्रति उनका जो लगाव है, उन सबके परिप्रेक्ष्य में हमारे सामने डा. लोहिया का एक ऐसा चित्रा प्रस्तुत होता है जिसमें भाव बोध एवं समय बोध के परे एक तीसरा आयाम अद्वितीय नैसर्गिक आध्यात्म बोध का भी मिलता है। कहने को डा. लोहिया कहते हैं कि धर्म की जरूरत हमें नहीं पड़ी और स्त्रियों के स्नेह एवं प्यार से वे सदा वंचित रहे। लेकिन डा. लोहिया का भावुक मन जब भगवान की चर्चा करता है तो राम के रामत्व को राम से बड़ा सिद्ध करता है तथा कृष्ण के कृष्णत्व को कृष्ण से बड़ा मानकर प्रस्तुत करता है। भले ही डा. लोहिया ने कभी किसी ईश्वर के सामने सिर न झुकाया हो लेकिन राम, कृष्ण–शिव लिखने बैठते हैं तो उनके अन्तस्थल की अस्तिकता और उनकी दृष्टि की व्यापकता दोनों ही स्पष्ट रूप से हमारे सामने प्रस्तुत होती है। उनकी भारत माता से प्रार्थना है कि- हे भारत माता मुझे शिव जैसी विशालता, राम जैसी मर्यादा और कृष्ण जैसा उन्मुक्त मन दो। उनकी उच्चतम आस्तिकता का परिचय सहज ही मिल जाता है, जिसे वे लाख छिपाना चाहें छिप नहीं सकती।

संदर्भ

1. समाजवादी दर्शन एवं डा. लोहियाः लक्ष्मी कान्त वर्मा पृष्ठ 25,
2. सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ 1991।

3. आधुनिक भारत का राजनीतिक चिन्तनः वी0पी0 वर्मा, पृष्ठ संख्या 54।
4. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा, 1971 ।
5. समाजवादी दर्शन और डा0लोहियाः लक्ष्मीकान्त वर्मा, पृष्ठ संख्या 25।
6. मर्यादित, उन्मुक्त और असीमित व्यक्तित्व और रामायण मेलाः– डा. राम मनोहर लोहिया, पृष्ठ संख्या 1–2।
7. समता विद्यालय न्यास, हैदराबाद, 1962।
8. दिनमान, 16 अक्टूबर 1977 का अंक, पृष्ठ 12।
9. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तनः डा. पुरूषोत्तम नागर, पृष्ठ संख्या 711
10. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तनः डा. पुरूषोत्तम नागर, पृष्ठ संख्या 711–712।